International Journal of Applied Research 2016; 2(8): 871-872

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(8): 871-872
www.allresearchjournal.com
Received: 28-06-2016
Accepted: 29-07-2016

डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

Correspondence
डॉ. सुशील निम्बार्क
सह आचार्य चित्रकला, राज मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान, भारत

भारतीय कला में कथात्मक वर्णनात्मकता की अभिव्यक्ति

डॉ. सुशील निम्बाक

प्रस्तावना

भावों की अनुभूति की संवेदनात्मक और सौन्दर्यपरक अभिव्यक्ति कला हैं। इस कला की कसौटी है कि यह प्रमाता को मानसी साक्षात्कार करायें। यह अभिव्यक्ति पत्थरों में तराशी हुई मूर्ति के माध्यम से हो सकती है, माटी से गढ़ी मूरत में हो सकती है और शब्दों में निर्मित बिम्बों में हो सकती है। बिम्ब ऐन्द्रिय अनुभूति जैसी अनुभूति कराते है। ये सब दृश्यात्मक प्रतीति के ही साधन है।

रंगो का प्रयोग करने वाला कलाकार रंगों से आशा, निराशा, सकट, त्रासदी आदि की अभिव्यक्ति कर देता है। यही सबकुछ शब्दों के माध्यम से भी किया जा सकता है। लेकिन दृश्य की प्रत्यक्षत अनुभूति कराने के लिए कलाकारों ने वर्णनात्मकता (छंततंजपवद) का सहारा लिया। क्यों कि दृ श्यात्मक प्रत्यक्ष के अवसर, वर्णनात्मक कला में अधिक होते हैं।

भारतीय कला एवं साहित्य की परम्परा प्रागऐहासिक एवं वैदिक काल से प्रारम्भ होती है। कला व साहित्य के संदर्भ में देखने पर ज्ञात होता है कि प्रागचित्रकला में ही वर्णानात्मकता के अंश दृष्टिगोचर होना आरम्भ हो जाते है। जहां तक साहित्य की बात करे तो वैदिक काल से ही कथात्मक अभिव्यक्ति होना आरम्भ हो जाती है। ऋग्वेद में वर्णनात्मकता (छंततंजपवद) का सौन्दर्य अदभूत है। इन्द्र सहित अनेक देवताओं के वर्णन, कथात्मक विवरण के आधार पर ही भारतीय संस्कृ ति में कथित मूर्ति अथवा चित्रों के रूप में देवी–देवताओं की आकृतियाँ सर्वप्रथम उकेरी गई। प्रागैतिहासिक काल के भीमबेटका पचमढी, होशंगाबाद, मिर्जापुर लिखिनियों के प्रागैतिहासिक चित्रों में कहीं–कहीं वर्णनात्मकता की शुरूआत देखी जा सकती है। जैसे लिखिनियों के प्रागचित्रों में एक हाथी के शिकार के चित्र में सबसे पहले घुड़सवार पालतू हाथिनी की मदद से, जंगली हाथी को पकड़ते दर्शाए गए हैं। चित्र के आगे के भाग में जंगली हाथी को पकड़ लिया गया हैं। और उत्सव की मुद्राओं में शिकारियों को दिखाया हैं। आदिकाल की चित्रकला (30,000 ई.पू. से 50 ई. तक) के साथ–साथ मौर्यकालीन भित्ति चित्र जो कि जोगीमारा की गुफा की भित्तियों पर बने हुए हैं। सन् 1914 ई. में असित कुमार हलदर तथा क्षेमेन्द्र नाथ गुप्त के अनुसार यहाँ की एक गुफा चित्र में गजेन्द्र मोक्ष की पौराणिक कथों को परिणाम कारक ढंग से चित्रित किया। भारत में बौद्ध कला की महान् विरासत भित्ति चित्रों के रूप में सुरक्षित है, इन भित्ति चित्रों का विस्तार भारत में सर्वत्र मिलता है। बौद्ध कला की इस महान विरासत का केन्द्र अजन्ता हैं। बौद्ध कला जीवन की घटनाओं तथा जातक कथाओं पर आधारित हैं। यहाँ शुरू से अन्तिम चरण की कला में कथात्मक कला के उदाहरण भरे पड़े है। वाचस्पति गैरोला ने भारतीय चित्रकला नामक अपनी पुस्तक में अजन्ता के चित्रों के विषयों को तीन भागों में बाँटा। जिसमें आलंकारिक चित्र, रूपभैदिक चित्र (बुद्ध के दार्शनिक व आध्यात्मिक स्वरूप) और जातरू कथाएँ। यहा सर्वाधिक चित्र जातक कथाओं के मिलते हैं। जिनमें भगवान बुद्ध के जीवन से संबंधी सर्वाविदित घटनाओं को कलात्मक रूप से परिणामकारक प्रस्तुतीकरण देखने को मिलता है। इसमें छदन्त जातक हस्ति जातक, मायादेवी का स्वप्न इस जातक, मरणासन्न राजकुमारी नन्द कुमार का भिक्षु होना आदि में वर्णानात्मकता पूर्ण चित्रों के माध्यम से कलाकारों ने बुद्ध के जीवन दर्शन को समझाने का प्रयास किया।

इसी प्रकार बाध की गुफा के चित्रों में भी एक चित्र में वर्णनात्मकता को आधार बनाकर विषय की रचना की गई है। यहाँ एक दृश्य चित्रित किया गया है। उसके बीच में एक द्वार है, द्वार के बाद इस चित्र का अगला भाग चित्रित हैं। हालांकि यह चित्र पूरी तरह नष्ट हो गया है। डॉ इम्पे ने जब इस गुफा को देखा तब तक यह सुरक्षित था। इसमें चार हाथी व तीन घोड़े है जो संभवतः अपने गन्तव्य पर पहुंच कर विश्राम कर रहे हैं महावत हाथियों के मस्तक पर भुजाएँ बांधे आराम की मुद्रा में हैं।

दो पुरूष आकृतियाँ पैदल चल रही हैं। जिनके हाथ में भाले तथा तलवार हैं जिनका ध्यान सामने बने भवन पर केन्द्रित है। इसके अगले दृश्य में आम के वृक्ष के नीचे नीला कपड़ा, जल पात्र एवं धर्म चक्र चित्रित हैं इसी के अगले दृश्य में केले के वृक्ष के नीचे बुद्ध ध्यान मुद्रा में बैठे अपने एक शिष्य को उपदेश दे रहे हैं। इसे वर्णनात्मक माध्यम से चित्रकारों ने आम धर्मावलम्बियों को धर्म के ज्ञान व दर्शन के मर्म को समझाने के लिए, इसलिए भी चुना कि इसके माध्यम से समझना सब के लिए आसान हो जाता है।

इसके उपरान्त मध्यकाल की चित्रकला जिसमें चार प्रतिनिधि शैलियाँ–पाल शैली जैन शैली, अपभ्रंश शैली और गुजरात शैली पनपी। हालांकि इन चारों शैलियों में इतनी समानता है कि इनको पृथक करने और इनका उपयुक्त नामकरण करने के संदर्भ में बहुत विवाद रहा। पाल शैली की सचित्र पोथियां साधन माला पंचशिखा करनदेव गुहा, गन्ध व्यूह तथा अपभ्रंश शैली के ग्रन्थ बसन्त विलास, गीतगोविन्द रति रहस्य, कल्पसूत्र, सुपासनाथचरियम् आदि में नरेटिव या वर्णनात्मक चित्रों के माध्यम से कथाओं को परिणाम कारक ढंग से प्रस्तुत किया गया लेकिन ध्यान देने वाली बात यह है कि धार्मिक दृष्टि से प्रेरित दृश्य अभिव्यक्त विषय वस्तु को सामान्य जन तक पहुंचाने के लिए थी इसलिए उनमें कलात्मकता पर जोर नहीं है। आकृति, रंग–विन्यास, संयोजन आदि की उत्कृष्टता पर अधिक ध्यान नहीं दिया गया है। परन्तु मध्यकाल के पश्चात मुगल कला हो या राजस्थानी या पहाड़ी लघु चित्र शैलियों की कला में अनेक ग्रन्थों को कलाओं के आधार पर कथात्मक क्रम में अनेक चित्रों का निर्माण हुआ। भले ही आईने अकबरी हो या रामायण, महाभारत या फिर गीत–गोविन्द, भागवत पुराण, मुल्ला दो प्याजा, रसिक प्रिया, पृथ्वीराज रासी, पंचतन्त्र के उपाख्यान नल दमयन्ती इत्यादि अनेक कथाओं और कविताओं को वर्णनात्मकता पूर्ण चित्रित किया गया है। किन्तु यहाँ इनमें मध्यकाल की कला की कलात्मक श्रेष्ठता पर भी सम्पूर्ण ध्यान दिया गया है।

सारांशतः यह कहा जा सकता है। आदि युग से अब तक कलाकार के मन–मस्तिष्क में यह विचार भलि–भाँति अवस्थित था कि कला का प्रस्तुतीकरण यदि वर्णनात्मकता के साथ किया जाये तो कला को देखने वाले के अन्तर्मन में कला में जिन विषयों को उकेरा गया वे अत्यधिक प्रभावी एवं परिणाम कारण ढंग से प्रभाव छोड़ते है। यह तथ्य भी उजागर होता है कि वर्णनात्मक चित्रों के निर्माण के समय कलाकार के मन–मस्तिष्क में विषय जनित बौद्धिकता हावी रहती है। जिससे कला में कलाकार की श्रेष्ठता पर ज्यादा ध्यान नहीं जाता।

जैन शैली, पाल शैली आदि इसके उदाहरण हैं परन्तु अजन्ता के चित्रों में वर्णनात्मकता एवं कलात्मकता उत्कृष्टता दोनों है। शायद यहाँ के कलाकार धार्मिक समर्पण से लबरेज थे। शायद उनके पास समय भी था। जो भी हो भारतीय कला में वर्णनात्मकता एक महत्वपूर्ण तत्व या महत्वपूर्ण विरासत बन कर उभरी है।

संदर्भ

1. Indian Painting – M.S. Randhawva
2. Gujarat Paining in the 15th Centuary
3. भारतीय चित्रकला–वाचस्पति गैरोला
4. भारतीय कला की कहानी–विद्या सागर उपाध्याय
5. कला एक अध्ययन – मनोहर कौल
6. The Painting of Budhist – E.B. Habell
7. Cave Temples of Ajanta – E.B. Habell
8. भारतीय चित्रकला एवं मूर्तिकला का इतिहास – डॉ. रीता प्रताप
9. राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा – डॉ. जयसिंह नीरज